दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-VI (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)–HL-**HL6**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Ravi Kumar Sihag

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): ____________________

ई-मेल पता (E-mail address): ____________________

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 06 20/08/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	3	9	4	6	9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): [signature]

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) मेरे हार गए सब जाने-माने कलावंत,
सबकी विद्या हो गई अकारथ, दर्प चूर,
कोई ज्ञानी गुणी आज तक इसे न साध सका।
अब यह असाध्य वीणा ही ख्यात हो गई।
पर मेरा अब भी है विश्वास
कृच्छ-तप वज्रकीर्ति का व्यर्थ नहीं था।
वीणा बोलेगी अवश्य, पर तभी।
इसे जब सच्चा स्वर-सिद्ध गोद में लेगा।

प्रस्तुत पंक्तियाँ नई कविता के प्रतिनिधि कवि 'सच्चिदानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'' की रचना 'असाध्य वीणा' से ली गई है।

प्रस्तुत पंक्तियों में 'वीणा' की असाध्यता के कारण राजा की पीड़ा एवं प्रियंवद के आगमन पर राजा के हृदय में उत्पन्न आशा किरण की व्याख्या की गई है।

व्याख्या :- वज्रकीर्ति द्वारा अपने संपूर्ण जीवन की साधना के फलस्वरूप तैयार 'वीणा' को बजाने में राजा के सारे कलावंत असफल हो गये क्योंकि वीणा को बजाने के लिये जो 'अहंकारशून्यता' एवं 'आत्मनिवेदन' का भाव होना चाहिये, वह उनमें न था।

इसी बात से दुखी होकर राजा प्रियंवद से आशा करता है कि उसके सच्ची

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कलाकारों की विद्या चूर होने के बाद भी प्रियंवद जैसा साधक एवं कलाकार उसे बजाने में सफल हो जाये। राजा को विश्वास है कि वज्रकीर्ति की आजीवन तपस्या व्यर्थ नहीं है और वीणा में ध्वनि अवश्य उत्पन्न होगी।

विशेष:- अज्ञेय की काव्यशास्त्रीय मान्यताएँ स्पष्ट करती ये पंक्तियाँ साबित करती हैं कि 'बहिर्मुखी प्रतिभा' के बजाय अन्तर्मुखी प्रतिभा अर्थात 'आत्मनिवेदन' एवं 'अहंकारशून्यता' कला की साधना हेतु अनिवार्य गुण है।
- अज्ञेय की मान्यताओं पर 'जैन बौद्धमत' - 'शून्यवाद' एवं 'योगाचार्य विज्ञानवाद' का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।
- 'अकारथ', 'दर्प', 'चूर', 'स्वर-सिद्ध' जैसे शब्द अज्ञेय को शब्दों का शिल्पी सिद्ध करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) धर्म का है एक और रहस्य भी,
अब छिपाऊँ क्यों भविष्यत् से उसे?
दो दिनों तक मैं मरण के भाल पर
हूँ खड़ा, पर जा रहा हूँ विश्व से।
व्यक्ति का है धर्म तप, करुणा, क्षमा,
व्यक्ति की शोभा विनय भी त्याग भी,
किन्तु, उठता प्रश्न जब समुदाय का,
भूलना पड़ता हमें तप-त्याग को।

प्रस्तुत पंक्तियाँ आधुनिक युग के राष्ट्रकवि 'रामधारी सिंह दिनकर' की लंबी प्रबंधात्मक कविता 'कुरुक्षेत्र' से ली गई है।

प्रस्तुत पंक्तियों में जहाँ एक ओर भीष्म पितामह युद्ध को विशेष परिस्थितियों में 'धर्मसंगत' बताते हैं, वहीं दूसरी ओर मानव समुदाय हितार्थ ~~धर्म~~ युद्ध को लड़ना अवश्यंभावी बताते हैं।

व्याख्या :- युधिष्ठिर के युद्ध की क्षति पर विलाप करने पर, भीष्म उसे बताते है कि ~~अब~~ अपने सम्पूर्ण जीवन का सार यह है कि धर्म में एक रहस्य छिपा है। और वह रहस्य यह है कि व्यक्ति के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

धर्म, तप, करुणा, त्याग, क्षमा जैसे मूल्य अनिवार्य रूप से होने चाहिये। परन्तु, यदि संकट समाज पर व्याप्त हो तो सम्पूर्ण समाज की रक्षा हेतु व्यक्ति को अहिंसा जैसे मूल्यों को त्याग शुरू करने से हिचकिचाना नहीं चाहिये। समाज के लिये सभी तप- त्याग का भी 'त्याग' किया जा सकता है।

विशेष :- 'भीष्म' के माध्यम से दिनकर ने अपने 'मार्क्सवादी मूल्यों' का प्रक्षेपण इन पंक्तियों में किया है। एक अन्य स्थान पर इन्होंने लिखा है-

" पुण्य है विच्छिन्न कर देना उसे
तेरी तरफ बढ़ रहा जो हाथ है।"

- भाषा सरल, स्वच्छ एवं ओज युक्त है
- सामुदायिक हितों को व्यक्तिगत हितों पर वरीयता दी गई है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'असाध्य वीणा 'मौन से स्वर' और 'स्वर से मौन' की यात्रा है।' इस मत के परिप्रेक्ष्य में असाध्य वीणा की अंतर्वस्तु का विश्लेषण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पं. विद्यानिवास मिश्र ने 'अज्ञेय' कृत विख्यात कविता 'असाध्य वीणा' में निहित केन्द्रीय पक्ष को 'मौन से स्वर' एवं स्वर से 'मौन की यात्रा' को बताया है। उनके अनुसार पूरी कविता को पढ़ने पर यही भाव आद्यंत व्यंजित हुआ है।

वस्तुत: अज्ञेय की रचना में यह अर्थ दो स्तरों पर सक्रिय है। प्रस्तुत अर्थ पर देखने पर यह बात सीधे-सीधे समझ आ जाती है। प्रारंभ में 'वीणा' मौन है क्योंकि राजा के सभी जाने-माने कलावंद अपना प्रयास कर-कर के थक चुके हैं और कोई भी सफल नहीं हो पाता।

किन्तु, प्रियंवद केशकंबली के आगमन के पश्चात् जब वह स्वयं को भूलकर, आत्मनिवेदन की भाव से वीणा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की स्तुति करता है तो वीणा के स्वर किलक उठते हैं -

"उस सघन निविड़ सन्नाटे में
प्रियंवद साध रहा था वीणा
नहीं, स्वयं अपने को शोध रहा था,"

वस्तुतः प्रियंवद बहिर्मुखी स्तर पर न जाकर वीणा को अन्तर्मुखी स्तर पर शोधने का प्रयास करता है तो वह पाता है कि ~~वस्त~~ वीणा का जो संगीत है वह न तो उसका है, न ही वीणा का है। इसी आत्मसाक्षात्कार के बल पर ही वीणा में संगीत की उत्पत्ति होती है -

"सहसा जाग उठी थी वीणा
किलक उठे थे स्वर शिशु

× × × × ×

उठ गई सभा, सब अपने अपने काम लगे
युग पलट गया।"

इस प्रकार प्रस्तुत अर्थ में अर्थात ऊपरी स्तर पर इस यात्रा को समझने में कोई

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

समस्या नहीं आती है।

किन्तु विद्यानिवास मिश्र जी के अनुसार इस कविता का अप्रस्तुत अर्थ अधिक महत्वपूर्ण है। यहाँ मौन से तात्पर्य उस 'ब्रह्म, 'महामौन' से है जो ही सभी स्वरों, संगीत का जन्मदाता है। स्वयं मौन रहकर ही वह विश्व के समस्त संगीत की उत्पत्ति करता है। कविता में अनेक जगह पर यह संकेत किये गये है-

- "अवतरित हुआ संगीत
स्वयंभू
जिसमें सोता है अखण्ड
ब्रह्म का मौन
अशेष प्रभामय।"

- "आपने जो सुना वह मेरा नहीं था
न ही वीणा का था
वह तो सब कुछ की तथता है
महाशून्य वह महामौन जो
सब में गाता है"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार अप्रस्तुत अर्थ में भी यह सविता मिश्रा जी की पंक्तियों से सुसंगतता रखती है।

वस्तुतः अज्ञेय पर अपनी कवि यात्रा के अन्तिम दिनों पर 'ज़ेन बौद्धमत' का प्रभाव पड़ा था और इसे अज्ञेय ने स्वीकार भी किया है। इस दर्शन की शाखा 'योगाचार्य विज्ञानवाद' के अनुसार विश्व में किसी भी भौतिक वस्तु की सत्ता नहीं है, सभी सत्ता चेतना अर्थात 'विज्ञानों' की है। इसी प्रकार 'माध्यमिक शून्यवाद' में भी परमशक्ति को 'शून्य' कहकर पुकारा गया है।

इन सभी दर्शनों के प्रभाव एवं अज्ञेय के सृजनात्मक रहस्यवाद के फलस्वरूप कविता में 'मौन से स्वर' एवं 'स्वर से मौन' की यात्रा सफल हुई है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'ब्रह्मराक्षस' में प्रयुक्त फैंटेसी शिल्प के स्वरूप एवं औचित्य पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपनी 'अनगढ़ ~~तेजोदीप्त~~ तेजोदिप्त भाषा', प्रगतिवादी विचार, जटिल यथार्थ के अलावा मुक्तिबोध की कविता ब्रह्मराक्षस की प्रसिद्धि जिन तत्वों को लेकर है, उनमें फैंटेसी शिल्प का भी प्रमुख स्थान है।

वस्तुतः फैंटेसी उस स्वप्न या कल्पना को कहते हैं जिनमें हम उन इच्छाओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ति करते हैं जो हमें यथार्थ में उपलब्ध नहीं हो पाती।

फैंटेसी शिल्प के ~~स्वरूप~~ औचित्य की बात करें तो मुक्तिबोध के द्वारा फैंटेसी का प्रयोग अपने यथार्थ की सम्पूर्णता में अभिव्यक्ति के लिये किया गया है। पश्चिमी कवि जार्ज 'लुकाच' की तरह भाववादी शिल्प को स्वीकारते हुए वे कहते हैं कि-

"यथार्थवादी शिल्प एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण में अंतर है। यथार्थ के अभिव्यक्ति के लिये यह बहुत संभव है कि यथार्थवादी शिल्प के बजाय भाववादी शिल्प के द्वारा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कथ्य को संप्रेषित करने की दृष्टि यथार्थवादी रही है।"

वस्तुत: मुक्तिबोध ने फैंटेसी को भाववादियों या अतियथार्थवादियों के बजाय अपने प्रगतिवादी मूल्यों के सफल संप्रेषण हेतु प्रयुक्त किया है।

स्वरूप के स्तर पर कविता में फैंटेसी के प्रयोग द्वारा अन्तर्जगत या अन्तर्मन की इच्छाओं को मुक्तिबोध ने सहज रूप में प्रस्तुत किया है, जो अन्य युक्ति द्वारा संभव नहीं -

"खूब ऊँचा एक जीना साँवला
उसकी अंधेरी सीढ़ियाँ
× ×
एक चढ़ना औ' उतरना
पुन: चढ़ना और फिसलना।"

दूसरे फैंटेसी के प्रयोग द्वारा ब्रह्मराक्षस कविता नाटकीयता को धारण कर पाई है -

"शहर के उस ओर परित्यक्त
सूनी बावड़ी के
भीतरी ठंडे अंधेरे में ..."

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तीसरे फैंटेसी के प्रयोग द्वारा मुक्तिबोध अपनी कविता 'ब्रह्मराक्षस' में बिना तार्किक क्रम की परवाह किये अपने विचारों को प्रस्तुत कर पाये हैं। बिना इस शिल्प के अपनी बातों एवं जटिल यथार्थ को कहना उनकी कविता को अमूर्त एवं अबोधगम्य बना सकता था।

चौथे फैंटेसी के प्रयोग से ही कविता अनावश्यक वर्णनों से बच पाई है क्योंकि स्वप्न में घटनाओं के तार्किक क्रम की अपेक्षा नहीं होती है

इस प्रकार भाववादी शिल्प को अपने प्रगतिवादी मूल्यों के संप्रेषण में प्रयोग करने का साहस मुक्तिबोध ने दिखाया है, और इसमें वे सफल भी रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'सृजनात्मक रहस्यवाद' के परिप्रेक्ष्य में 'असाध्य वीणा' कविता की अंतर्वस्तु का अवगाहन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रहस्यवाद' से तात्पर्य किसी 'अमूर्त' या 'अज्ञात' सत्ता के प्रति विरह, बेचैनी के भाव से है। हिन्दी साहित्य में सामान्यतः रहस्यवाद दो रूपों में आया है - भक्ति काव्य में ईश्वरीय वियोग के कारण उत्पन्न रहस्यवाद तो दूसरा छायावादी काव्य में व्यक्ति - समाज की टकराहट से उत्पन्न रहस्यवाद।

'अज्ञेय' का रहस्यवाद इन दोनों से अलग है। प्रारम्भ में ईश्वरीय अनास्था से चली इनकी यात्रा टैगोर के रहस्यवाद को स्पर्श करती हुई अन्त में 'जैन बौद्धमत' से प्रभावित सृजनात्मक रहस्यवाद में पर्यवसित हो गई है। एक स्थान पर अज्ञेय ने लिखा भी है।

"मैं भी एक प्रवाह में हूँ,
पर मेरा प्रवाह ईश्वर की ओर उन्मुख नहीं है,
मैं उस असीम शक्ति से संबंध जोड़ना चाहता हूँ

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अभिभूत होना चाहता हूँ
जो मेरे भीतर है।"

उनकी कविता असाध्यवीणा में भी यह रहस्यवाद कई स्तरों पर दिखाई देता है। पहले स्तर पर उनके रहस्यवाद की प्रमुख विशेषता यह है कि यह व्यक्ति विशेष के स्तर पर होता है न कि सम्पूर्ण समाज के स्तर पर। कबीर की पंक्तियों - 'जब मैं था, हरि नहीं, जब हरि है मैं नाहिं' की भाँति महाशक्ति से साक्षात्कार के समय व्यक्ति अकेला होता है। निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य है -

'सुनता हूँ मैं
पर मैं मुझसे परे
शब्द में लीयमान'

दूसरे स्तर पर सृजन की प्रक्रिया में भी प्रियंवद ने अन्य कलावंतों की भाँति कला का प्रदर्शन न कर महाशक्ति के सम्मुख आत्मनिवेदन का भाव प्रस्तुत कर अन्तर्मन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के स्तर पर वीणा को साधने का प्रयास किया तभी वीणा से संगीत उत्पन्न हुआ।

तीसरे स्तर पर सृजनात्मक रहस्यवाद की अभिव्यक्ति वहाँ मिलती है जहाँ संगीत का ~~अ~~ सम्मोहनकारी प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर अलग - अलग पड़ता है।

"सब डूबे एक साथ
सब अलग - अलग एकाकी पार तिरे"

इस प्रकार अज्ञेय ने अपने वैचारिक चिंतन एवं विचारधाराओं के प्रभाव से अपने सृजनात्मक रहस्यवाद के दर्शन एवं चिंतन को अनुभूति में घुला दिया है जो कि असाध्य वीणा में स्पष्टतः दिखलाई पड़ता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) व्यक्ति और समाज के संबंध को लेकर अज्ञेय के क्या विचार हैं? 'असाध्य वीणा' कविता के आधार पर बताइये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'असाध्य वीणा' की रचना का समय 1961 का है इस समय में व्यक्ति एवं समाज की टकराहट प्रमुख विषय थी। अज्ञेय के सामने दो प्रमुख विचारधाराएँ थीं- एक मार्क्सवादी विचारधारा जो संपूर्ण व्यक्तित्व को ही सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का 'उपोत्पाद' मानती थी, जबकि दूसरी, द्वितीय विश्वयुद्ध, मशीनीकरण आदि से उत्पन्न अमेरिका की 'भूखी पीढ़ी' जो कि व्यक्ति की स्वतंत्रता में किसी भी सामाजिक बाधा को स्वीकार्य नहीं मानती थी।

सामान्यतः अज्ञेय पर व्यक्तिवादी होने का आरोप है क्योंकि अज्ञेय व्यक्तित्व पर अत्यन्त बल देकर नई कविता की 'आधुनिक भावबोध की व्यक्तिवादी धारा' के समर्थक हैं परन्तु फिर भी अज्ञेय ने यहाँ असाध्यवीणा में दोनों अतिवादों से बचते

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हुए संतुलन का परिचय दिया है।

व्यक्ति-समाज के संबंधों का प्रथम उदाहरण अज्ञेय ने अपनी रचना 'नदी के द्वीप' में दिया है जहाँ उन्होंने व्यक्ति व समाज को विरोधी मानने से इंकार कर दिया है -

"हम नदी के द्वीप हैं
हम नहीं कहते हमें छोड़ स्रोतस्विनि बह जाये
वह हमें आकार देती है।"

इसी प्रकार का बोध अज्ञेय ने असाध्यवीणा में प्रस्तुत किया है जब अज्ञेय वीणा में निहित संगीत को व्यक्तिगत उपलब्धि न मानकर किरीटी तरु एवं उसके आस-पास के जीवों एवं सम्पूर्ण समाज की देन बताया है। यहाँ अज्ञेय इलियट के परंपरा सिद्धान्त से भी सुसंगतता रखते हैं।

"तू उतर बीन के तारों से
अपने से गा, अपने को गा" (किरीटी तरु को संबोधित करना)

परन्तु अज्ञेय यह मानने को भी तैयार नहीं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है कि व्यक्ति हमेशा समाज के साथ चलकर व्यक्तित्व का त्याग कर दें। 'नदी के द्वीप' कविता में वे कहते हैं कि-

" हम बहते नहीं हैं
क्योंकि बहना रेत होना है
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं "

इसीप्रकार असाध्यवीणा में संगीत की उत्पत्ति का सम्मोहनकारी प्रभाव संपूर्ण समाज पर एक समान न पड़कर हर एक व्यक्ति पर अलग-अलग पड़ा क्योंकि अज्ञेय के अनुसार समाज में हर व्यक्ति अपनी एक पृथक सत्ता रखता है-

"सब डूबे एक साथ
सब अलग-अलग एकाकी पार तिरे।"

यहाँ अज्ञेय ने व्यक्तित्व के पक्ष में एक अन्य विचार यह दिया है कि यह आवश्यक नहीं है कि हर व्यक्ति सामाजिक इच्छानुरूप कार्य करे। जब भी कोई व्यक्ति अपने स्वधर्म के अनुरूप कार्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करता है तो समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन खुद-ब-खुद हो जाते हैं।

"उठ गई सभा
सब अपने-अपने काम लगे
युग पलट गया।"

इस प्रकार अज्ञेय ने संतुलन का परिचय देते हुए व्यक्ति एवं समाज को परस्पर विरोधी न मानते हुए यह विचार स्थापित किया है कि व्यक्ति समाज 'में' स्वतंत्र है, समाज 'से' नहीं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'जनसाधारण की सहज भावनाओं, समस्याओं से लेकर सामान्य जनजीवन तक की अभिव्यक्ति करती हुई नागार्जुन की कविता विशिष्ट व उदात्त की उपेक्षा व साधारण के प्रति प्रतिबद्धता की मिशाल पेश करती है।' इस मत से आप कहाँ तक सहमत हैं? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर से प्रारम्भ हुई हिंदी साहित्य की जनवादी धारा तुलसी, निराला से होते हुए नागार्जुन पर आकर पूर्णता प्राप्त करती है। जनसामान्य के विषयों, भावनाओं, समस्याओं के वर्णन के कारण ही नागार्जुन - डॉ॰ नामवर सिंह के शब्दों में- 'आधुनिक भारत के सच्चे प्रतिनिधि जनकवि' माने जाते हैं। एक स्थान पर तो नागार्जुन ने साफ लिखा है-

"जनता मुझसे पूछ रही है क्या बतलाऊँ,
जनकवि हूँ मैं साफ कहूँगा, क्यों हकलाऊँ"

नागार्जुन के काव्य में जनसाधारण की भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति हुई है। उनका 'प्रेम' उदात्त व छायावादी न होकर सहज सामान्य दाम्पत्य प्रेम है। अपनी पत्नी से दूर व्यक्ति के संबंध में निम्न पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

"घोर निर्जन में परिस्थिति ने दिया है डाल
याद आता है तुम्हारा सिंदुर तिलकित भाल।"

इसी प्रकार 'गुलाबी चूड़ियाँ' जैसी कविताओं में पुत्री के प्रति वात्सल्य तो अन्य कविताओं में किसानों की स्थिति का वर्णन नागार्जुन के प्रमुख विषय हैं।

यदि समस्याओं पर चर्चा करें तो नागार्जुन के काव्य में साधारण, निम्न वर्ग की समस्याएँ ही मुखरित हुई हैं। कविता चाहे 'अकाल और उसके बाद' में अकाल की समस्या (कई दिनों तक चूल्हा रोया...) हो या 'हरिजनगाथा' में दलितों के शोषण की समस्या - ये सभी जन साधारण वर्ग से जुड़ी हुई समस्याएँ हैं।

इसी प्रकार नागार्जुन का कटहल, नेवला, मुद्दे जैसे विषयों पर लिखना, कानी कुतिया, कौआ, जैसे पशु-पक्षियों का आना अभिजात्य विचारकों की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नज़र में संदेस है, परन्तु जनसामान्य के निकट है।

परन्तु उपर्युक्त विवरण का यह निष्कर्ष न निकाला जाये कि नागार्जुन उदात्त की उपेक्षा करते हैं। 'बादल को घिरते देखा है', में हिमालय के सौन्दर्य की वस्तुनिष्ठ व्याख्या यह साबित करती है कि नागार्जुन की कविता न तो उदात्त की 'उपेक्षा' करती है न ही 'सौन्दर्य' को उच्च वर्गों हेतु आरक्षित वस्तु मानती है। वे जड़ मार्क्सवादी नहीं हैं। इसी कारण 'गेहूँ' के साथ 'गुलाब' को भी सभी वर्गों को उपलब्ध कराने की कामना नागार्जुन करते हैं।

इस प्रकार नागार्जुन की कविताएँ जनसामान्य की भावनाओं, समस्याओं आदि का तो जीवंत चित्रण करती ही हैं ~~परन्तु~~ इसके साथ-साथ उनका जनकवि चरित्र आभिजात्यमूलक एवं उदात्त सौन्दर्य को भी जनसाधारण को उपलब्ध कराने का प्रयास करता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 'ब्रह्मराक्षस' कविता की बिंब-योजना के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये। 15

नई कविता में 'बिंबों' की महत्ता बहुत अधिक है, इसी कारण कुछ आलोचक नई कविता को 'बिंबों का नगर' कहते हैं। पश्चिमी विद्वान किलेट के अनुसार यह वह युक्ति है जो कविता को पाठक की ऐन्द्रिय अनुभूति का विषय बना देती है।

नई कविता में मुक्तिबोध की कविताएँ बिंब-रचना में अद्वितीय है। स्वयं मुक्तिबोध ने बिंब-सृजन हेतु उल्लेखनीय प्रयास किया है।

ब्रह्मराक्षस कविता पर प्रकाश डालें तो यहाँ मुक्तिबोध के बिंबों की सबसे प्रमुख विशेषता इसकी 'भयानकता' है। स्वयं मुक्तिबोध ने अपनी कविताओं को 'भयानक हिडिम्बा', 'वास्तव की विस्फारित प्रतिमाएं' एवं 'विकृताकृति बिंब' कहा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

है। ब्रह्मराक्षस कविता की शुरुआती पंक्तियाँ इस दृष्टि से प्रमुख हैं-

"शहर के उस ओर
परित्यक्त सूनी बावड़ी के
भीतरी ठंडे
अंधेरे में"

इसी भयानकता के कारण ही निर्मला जैन ने भी कहा है - "दिन के प्रकाश के चितेरे तो बहुत से कवि हुए हैं, पर रात के अंधेरे से टकराने की हिम्मत निराला और मुक्तिबोध जैसे गिने-चुने कवि ही कर पाये हैं।"

मुक्तिबोध ने केवल मूर्त विषय ही नहीं बल्कि गणित, अर्थशास्त्र, सैनिक जीवन जैसे अमूर्त विषयों पर भी बिंब रचना की है। निम्न पंक्तियों में गणित के दशमलव का सहारा लेकर मजदूर वर्ग की असंगठनशीलता को उजागर किया है-

"उद्विग्न भालों से
सितारे आसमानी छोर तक फैले हुए

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"अनगिन दशमलव के
दशमलव बिंदुओं के सर्वतः
पसरे हुए उलझे गणित मैदान में"

अन्य विभिन्न प्रकार के दृश्य, श्रव्य, गतिशील बिंब भी कविता में हैं -

"अनोखा स्तोत्र, कोई क्रुद्ध मंत्रोच्चार
अथवा शुद्ध संस्कृत गालियों का ज्वार" (श्रव्य + गतिशील)

"बावड़ी की इन मुंडेरों पर
मनोहर हरी कुहनी टेक
बैठी है टगर" (स्थिर बिंब)

"हाथ के पंजे बराबर
बाँह छाती मुँह छपाछप" (स्पर्श बिंब)

इस प्रकार 'ब्रह्मराक्षस' कविता बिंबों की दृष्टि से अपना उल्लेखनीय स्थान रखती है। हालाँकि इसके बिंब मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' के बिंबो जितने संश्लिष्ट तो नहीं हैं, फिर भी अन्य किसी भी कविता पर भारी पड़ते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) करते हुए उसके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) यह पंच नहीं हैं, राच्छस हैं, पक्के राच्छस। यह सब हमारी जगह-जमीन छीनकर माल मारना चाहते हैं। डांड तो बहाना है। समझाती जाती हूँ, पर तुम्हारी आंखें नहीं खुलतीं। तुम इन पिसाचों से दया की आसा रखते हो, सोचते हो, दस-पाँच मन निकालकर तुम्हें दे देंगे। मुंह धो रखो।

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी की उपन्यास धारा के शिखरपुरुष 'प्रेमचन्द' द्वारा रचित कालजयी उपन्यास 'गोदान' से ली गई है।

इन पंक्तियों में धनिया द्वारा होरी पर जुर्माना लगाये जाने पर उग्र रूप में कहे गये कथनों का वर्णन किया है।

व्याख्या :- होरी के पुत्र गोबर द्वारा झुनिया से प्रेम करने पर गाँव की पंचायत में बात चलती है क्योंकि झुनिया विधवा है। इस बात पर पंचायत द्वारा होरी पर जुर्माना लगाया जाता है।

इसी कारण होरी की पत्नी धनिया इस अन्याय पर क्रोध व्यक्त करती हुई

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

पंचों को खूब खरी-खोटी सुनाती है। साथ ही होरी को कहती है कि ये पंच खून चूसने वाले राक्षस हैं और इस प्रकार के भेदभावमूलक समाज में न्याय की अपेक्षा रखना भूल है।

<u>विशेष</u>:- (i) प्रेम-विवाह पर आज के ज़माने में 'खाप-पंचायतों' के निर्णयों की भविष्यवाणी के रूप में प्रेमचन्द का यह सन्दर्भ प्रासंगिक प्रतीत होता है।

(ii) न्याय व्यवस्था किस प्रकार शोषित वर्ग का उत्पीड़न करती है, इसका सन्दर्भ यशपाल ने '<u>दिव्या</u>' उपन्यास में रुद्रसेन और देवशर्मा के प्रसंग द्वारा दिखलाया है।

(iii) धनिया का उग्र रूप तत्कालीन न्याय व्यवस्था पर एक तमाचा है।

(iv) भाषा सामान्य बोल-चाल की हिंदुस्तानी भाषा के नजदीक है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) इसके बाद छोटे-छोटे दलों में बँटकर लोग आपस में बातचीत करने लगे। हाथों में क़ीमती गिलास थामे हुए कोई दल देश में बढ़ते भ्रष्टाचार पर चिंता कर रहा था, तो काई फैलती हुई अव्यवस्था पर। किसी के सोच और रोष का विषय था–देश का तेज़ी से गिरता हुआ नैतिक स्तर, तो किसी को दिन-ब-दिन बढ़ते हुए मूल्य परेशान कर रहे थे। रोगन-पॉलिश से चमकती हुई, लक़दक़ कपड़ों में लिपटी स्त्रियाँ पुरुषों की हाँ में हाँ मिला रही थीं।

प्रस्तुत पंक्तियाँ नवलेखन दौर की लेखिका 'मन्नु भंडारी' के राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से उद्धृत है। उपन्यास में तत्कालीन राजनीतिक स्थितियों में निहित विद्रूपताओं का यथार्थ किया गया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में लेखिका ने सक्सेना को सस्पेंड कर बिन्दा को जेल भेज देने के कृत्यों के कारण मिस्टर सिन्हा के प्रमोशन की पार्टी के दृश्यों का चित्रण है।

व्याख्या :- लेखिका ने इस दृश्य के माध्यम से तत्कालीन नौकरशाही एवं राजनीतिक व्यवस्था में निहित भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है क्योंकि एक जीवन-अर्जन युक्त वेतन वाले सिविल सेवकों के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हाथों में कीमती आभूषणों पर किसी का ध्यान नहीं जाता क्योंकि भ्रष्टाचार समाज में स्वीकार्य हो चुका है। अनैतिक लोगों द्वारा नैतिकता के संवाद करना भी तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य करता है।

निरोध: लेखिका ने 'कंट्रास्ट' के माध्यम से नैतिक मूल्यों के पतन एवं भ्रष्टाचार की वृद्धि की चर्चा की है।

(ii) लेखिका ने इन वाक्यों में अद्भुत व्यंग्य क्षमता का परिचय दिया है।

(iii) महिला होकर भी पुरुष वर्चस्व की राजनीति पर सटीक उपन्यास लिखना लेखिका की गहरी समझ को प्रदर्शित करता है।

(iv) भाषा सहज, स्पष्ट व बोधगम्य है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'श्रद्धा-भक्ति' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की निबंध-शैली की विशिष्टताओं का उद्‌घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

शुक्ल जी के मनोविकारपरक निबंधों की चर्चा करें तो उनका निबंध 'श्रद्धा-भक्ति' सर्वोच्च स्थान रखता है। शीर्षक के कारण एकबारगी यह प्रतीत हो सकता है कि यह भावपरक निबंध है, परन्तु ~~शुक्ल~~ शुक्ल जी ने इसे भी 'विचारों की गूढ़ गुंफित परंपरा' से संपृक्त करते हुए शैली के स्तर पर चमत्कार किये हैं।

शैली के स्तर पर शुक्ल जी के निबंध 'विरुद्धों के सामंजस्य' को धारण करते हैं अर्थात् जहाँ एक ओर वैज्ञानिक शैली की वस्तुनिष्ठता, स्पष्टता, कसाव दिखलाई पड़ता है तो दूसरी ओर साहित्यिक शैली की भावात्मकता, सहृदयता भी। कुल मिलाकर शुक्ल जी के निबंधों की शैली में वैज्ञानिकता एवं साहित्यिकता; वस्तुनिष्ठता एवं व्यक्तिनिष्ठता; मनोविकारात्मकता एवं साहित्यिकता एक साथ सम्पादित रहती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1) श्रद्धा भक्ति में वैज्ञानिक लेखन की विशेषताएँ

वैज्ञानिक लेखन से तात्पर्य है जहाँ विषय के अनुरूप चिंतन किया गया हो, भाषा में कसाव हो, वाक्यों की तार्किक श्रृंखला विद्यमान हो।

(क) शब्दों के स्तर पर :- शुक्लजी ने शब्दों के स्तर विषयानुरूप शब्दों का चयन किया है, कहीं भी शब्दों का अपव्यय दिखाई नहीं पड़ता जैसे -

"~~जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था~~

'प्रेम में घनत्व अधिक है तो श्रद्धा में विस्तार।

(ख) वाक्यों का श्रृंखलाबद्ध विधान :-

"श्रद्धा के द्वारा हम दूसरे के किसी महत्व के अधिकारी नहीं हो सकते पर भक्ति के द्वारा हो सकते है xxxx राम पर अनन्य भक्ति करके हनुमान राम अन्य राम भक्तों के भक्ति के अधिकारी हुए।"

(ग) सूत्र वाक्यों का प्रयोग :- कम शब्दों में वाक्यों को प्रयुक्त करने की ~~क्ष~~ क्षमता एवं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इस शैली को सूत्र शैली कहते हैं।
"प्रेम और श्रद्धा का योग भक्ति है।"

(घ) कथ्य को उचित प्रमाणों से सिद्ध करना :-
शारीरिक बल के प्रति श्रद्धा के सन्दर्भ को उन्होंने प्रो० राममूर्ति के उदाहरण द्वारा सिद्ध किया है।

(2) साहित्यिक लेखन की विशेषताएँ :-

(क) व्यंग्य की दशा :- "हितोपदेश के गदहे ने तो बाघ की खाल ओढ़ी थी। यहाँ लोग बाघ की बोली बोल लेते हैं।"

(ख) आवेश की दशा :-
"यह किसी को समाज के पक्ष में भारी स्वार्थ त्याग करते देख हमारे मुँह से धन्य-धन्य भी न निकले तो हम समाज के किसी काम के नहीं।"

(घ) मुहावरों का प्रयोग :-
"उसे ढाई कोस नौ दिन में चलना पड़ता है"

(ङ) अलंकारों का प्रयोग :- वैसे तो यह विधा गद्य में काव्य नहीं है परन्तु कुछ जगह शुक्ल जी ने अप्रस्तुत का भी सहारा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

लिया है -
"जिस समाज में ऐसे किसी ज्योतिष्मान शक्ति का उदय होता है ××× मंगल की ऐसी वर्षा होती है कि सारे दुःख और क्लेश बह जाते हैं।

(ख) क्रोध की दशा : शुक्ल जी क्रोध में परआकांक्षियों को 'शराबी, व्यसनी, गंजेड़ी, चंडूबाज' कहकर पुकारते हैं।

इस प्रकार शुक्ल जी की भाषा में चिंतन तो वैज्ञानिक शैली में किया गया है, सभी सिद्धान्त कथन भी इसी शैली में हैं परन्तु पाठक को शुष्कता, नीरसता एवं ऊब से बचाने हेतु साहित्यिक युक्तियों का भी ठीक मात्रा में प्रयोग किया गया है जो कि अन्यत्र कहीं मिलना दुर्लभ है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) "पांडित्य और लालित्य का विलक्षण संयोग आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की निबंध-कला की अन्यतम विशेषता है।" इस कथन के संदर्भ में 'कुटज' निबंध का विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी में ललित निबंध परंपरा के सबसे प्रमुख 'हस्ताक्षर' हैं। अपने प्रमुख निबंध संग्रहों 'अशोक के फूल', 'विचार और वितर्क' और 'कुटज' आदि सभी में इन्होंने पांडित्य तत्व के साथ लालित्य तत्व को उभारा है। 'कुटज' तो इस दृष्टि से इनका क्लासिक उदाहरण माना जाता है।

उपरोक्त निबंध में पहले खंड में हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कुटज के नामकरण के स्रोत की अन्वेषणा में अपने पांडित्य तत्व की जोरदार उद्भावना की है। पेशे से अध्यापक के साथ-साथ आलोचक, बहुश्रुत, बहुविषयज्ञानी होने के कारण इन्होंने भाषा विज्ञान, शास्त्रों, प्राचीन काव्यों, दर्शनों को भी 'कुटज' नाम हेतु मथ डाला है।

सर्वप्रथम वे अपने ज्ञान से

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

शिवालिक को 'शिव की अलक' के रूप में व्याख्यायित करते हैं।

इसके बाद कुटज के नामकरण में सर्वप्रथम कूट (घड़े) से कुटज का निर्धारण करते हैं। अगस्त्य मुनि, कालिदास के साहित्य का मेघदूत, प्राचीन संस्कृत शास्त्रों में निहित शब्द कुटहारिका एवं कुटकारिका (दासी के अर्थ) में भी वे कुटज के अर्थ निर्धारण का प्रयास करते हैं तो उनका 'पांडित्य' साफ-साफ झलकता है। यहाँ तक कि प्रसिद्ध भाषा-वैज्ञानिक 'सिल्वाँ लेवी' पर विचार करना भी उनके वृहत-ज्ञान का द्योतक है।

परन्तु निबंध का दूसरा खंड उनके 'लालित्य' के प्रक्षेपण का उदाहरण पेश करता है। यहाँ वे कुटज की शारीरिक विशेषताओं के आधार पर मनुष्य को संदेश देते हैं -

"जीना चाहते हो? पाषाण तोड़कर पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संग्रह करो।"

कहीं-कहीं संवादों में प्रश्नों एवं सवालों को करने से और संवादों का जन्म होता है जो 'लालित्य' तत्व का ही अंग है।

"इस गिरिकूट बिहारी का नाम क्या है?"

यह निबंध आत्मकथात्मक शैली में लिखा प्रतीत होता है उनके निबंध की अंतिम पंक्तियों से सिद्ध होता है क्योंकि द्विवेदी जी भी अपने सम्मान के लिये प्रयासरत थे

"पहचानता हूँ उजाड़ के साथी। तुम्हें अच्छी तरह पहचानता हूँ। नाम भूल रहा हूँ xx नाम में क्या रखा है? व्हाट्स इन ए नेम? xxx मेरा मन नाम के लिये व्याकुल है।"

इस प्रकार पांडित्य के साथ व्यक्तित्व व्यंजना के सभी उपकरण - भावनात्मकता, सहृदयता, सरलता, स्पष्टता आदि इस निबंध में प्रकट हो गये हैं। तभी इस निबंध की गणना द्विवेदी जी एवं संपूर्ण हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ ललित-निबंधों में की जाती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ग) 'संवत्सर' निबंध में निहित वैचारिकता का उद्घाटन कीजिये। 15

'संवत्सर' अज्ञेय का काल चिंतन संबंधी निबंध है, जिसमें उन्होंने अपने काल संबंधी विवेचन प्रस्तुत किया है। इस निबंध का प्रतिपाद्य बौद्ध धर्म एवं प्राचीन भारतीय उपनिषदों से प्रभावित प्रतीत होता है।

निबंध मे अज्ञेय ने 'ध्यान देना' और 'दृष्टि डालना' जैसे शब्दों के द्वन्द्व के माध्यम से निबंध के प्रतिपाद्य का उद्घाटन किया है। उनके अनुसार ध्यान देने वाले लोग केवल नश्वरता एवं क्षणभंगुरता को ही देख पाते हैं जबकि 'दृष्टि' से युक्त लोग जगत की अनश्वरता एवं सततता की अनुभूति कर पाते हैं। एक जगह अज्ञेय ने कहा भी है-

"अब उन लोगों की क्या कहिए जिन्हें ओस की बूंदों में केवल नश्वरता दिखाई

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पड़ती है। धूप का चमत्कार नहीं दिखता।"

अज्ञेय के अनुसार जो भी वस्तु मरती है वह दूसरे की प्राणवत्ता में योगदान दे देती है अर्थात् हर वस्तु 'उत्पादन की क्षमता' या 'अर्थक्रियाकारित्व' से युक्त है। इस विचार पर बौद्ध दर्शन का प्रभाव दिखता है। इसे अज्ञेय ने एक छोटी कविता के माध्यम से पुष्ट भी किया है।

"झरना : झरता पत्ता
हरी डाल से
अटक गया।"

अज्ञेय ने अपने चिंतन में 'संवत्सर' को व्यक्तित्व प्रदान कर उसे ही स्रष्टा घोषित किया है एवं विश्व की सम्पूर्ण क्रियाएँ संवत्सर के यज्ञ की आहुति के ही समान है।

आज के वैज्ञानिक युग को प्राचीन

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उपनिषदों व बौद्ध चिंतन से पुष्ट करने का प्रयास भी अज्ञेय ने किया है क्योंकि आज "न तो दिक् के बिना काल का ज्ञान संभव है, न ही काल के बिना दिक् का।"

अन्त: में अज्ञेय जीवन की सार्थकता की चर्चा प्रश्नों के माध्यम से करते हैं कि ज़रूरी नहीं कि हर प्रश्न का उत्तर मिले ही, कुछ प्रश्नों का मिलना ही जीवन की अर्थवत्ता में और सार्थकता में योगदान दे जाता है। -

'निरे जिज्ञासु को लगेगा ही लगेगा कि वह प्रश्न अनुत्तरित रह गया; पर तब तक वह अपना काम कर चुका होता है; अर्थवत्ता में योगदान दे चुका होता है।"

इस प्रकार अज्ञेय ने अपने एक निबंध में सम्पूर्ण काल संबंधी अपने विवेचन को तार्किक एवं लालित्यपूर्ण वाक्यों से उजागर कर दिया है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation